Set - III

पूर्णांक – 100 समय : तीन घंटे

सामान्य-निर्देशः

I. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

II. प्रश्न के विविध भागों के उत्तर यथासंभव क्रमवार लिखें।

III. प्रश्नों के सामने दर्शाये गये अंक पूर्णांक के द्योतक हैं।

खंड- 'क'

प्र. 1 अधोलिखित काव्यांश को ध्यान से पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

'जय हो', जग में जले जहाँ भी, नमन पुनीत अनल को,
जिस नर में भी बसे, हमारा नमन तेज को, बल को।
किसी वृन्त पर खिले विपिन में, पर नमस्य है फूल,
सुधी खोजते नहीं गुणों का आदि, शक्ति का मूल।
ऊँच-नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,
दया-धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है।
क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,
सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें तप-त्याग।
तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतला के,
पाते है जग में प्रशस्ति अपना करतब दिखला के।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक
बीर खींच कर ही रहते हैं इतिहासों में लीक।

(क) 'जय हो' कहते हुए कवि ने किसकी जय की कामना की है? 2

(ख) सुधी गुणों का आदि और शक्ति का मूल नहीं खोजते- इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

(ग) श्रेष्ठ ज्ञानी और पूज्य प्राणी कवि ने कैसे व्यक्ति को माना है? 2

(घ) जो तेजस्वी हैं, वे कैसे सम्मान प्राप्त करते है? 2

(ङ) 'वीर खींच कर ही रहते हैं, इतिहासों में लीक'- इस पंक्ति का भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर (क) कवि ने पवित्र अग्नि की जय की कामना की है। यह पवित्र अग्नि संकल्पों की है। अच्छा करने-रचने का संकल्प जिस नर में हो, कवि उसकी जय की कामना करता है। शुभ की संभवानाओं से भरे व्यक्ति की विजय की इच्छा की अभिव्यक्ति कवि ने की है। 'पुनीत' का अर्थ है 'पवित्र' और 'अनल' का अर्थ है 'अग्नि'। यहाँ पवित्र का आशय होगा शुभ। नया रचने की संभावनाओं की विजय हो।

(ख) किसी व्यक्ति को गुणसंपन्न देखकर विद्वान-समझदार उसके अतीत की दिशाओं में नहीं जाते। जो व्यक्ति सामने है, वह गुणों और संभावनाओं से भरा हुआ है, विद्वानों के लिए इतना ही पर्याप्त है। गुणों का आरंभ कहाँ से होता है, शक्ति का मूल या स्रोत कहाँ है, अर्थात व्यक्ति किस वंश का है, किस इलाके से आया है- इस ओर गए बिना विद्वान गुणों की सराहना करते हैं।

(ग) जो ऊँच-नीच का भेद नहीं मानता, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है। संसार में सब मनुष्य बराबर हैं। सब के एक समान अधिकार और कर्त्तव्य हों, यही काम्य है। यही बेहतर स्थिति है। किसी को अकारण बड़ा मानना और दूसरों को बेवजह छोटा या हीन मानना स्वीकार्य

Scanned with CamScanner

नहीं। अतः जो ऊँच-नीच का भेद नहीं मानता वही सच्चे अर्थो में ज्ञानी है।

दूसरों के प्रति जिसमें संवेदनशीलता का भाव न हो, जो अच्छे कर्म न करें, वह पूज्य नहीं हो सकता। पूज्य वह नही हो सकता है, जिसमें परदुःख कातरता नहीं हो, जो सत्कर्म पथ पर नहीं है।

(घ) जो तेजस्वी हैं वे अपना गोत्र बता कर सम्मान प्राप्त करना अनुचित मानते हैं। वे सिर्फ इस आधार पर स्वयं को बड़ा, श्रेष्ठ या पूज्य नहीं मानते कि वे किसी उच्च वंश में उत्पन्न हुए हैं। वे अपने कर्मो से अपनी योग्यता, महत्ता और उपयोगिता प्रमाणित करते हैं। इस प्रकार वे सम्मान के सहज अधिकारी बन जाते है।

(ङ) वीर संसार को प्रभावित करते हैं। जो वीर हैं, वे बड़े अच्छे और सार्थक कर्म करते हैं। वे इतिहास को सकारातमक रुप में प्रभावित करते हैं। संसार के लिए यह सहज संभव नहीं होता कि वे उनके कर्मो का विश्लेषण आधारित अर्थ तुरंत समझ सकें, लेकिन ऐसा अवश्य होता है कि इतिहासों में अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं।

प्र. 2 अधोलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

भाषा के मुख्य दो रूप हैं- मुद्रित व श्रव्य। मुद्रित भाषा के लिए शिक्षित होना आवश्यक है। जबकि श्रव्य के लिए पढ़ा-लिखा होना जरूरी नहीं। निरक्षर होने पर भी ज्ञान, श्रव्य परंपरा से प्राप्त होता रहता है। भारतवर्ष इसका अभूतपूर्व उदाहरण हैं। वेद, वेदांग तथा अन्य आरम्भ से गुरुमुख से सुन-सुनकर आगे बढ़ते गए। सहस्त्रों पद-भजन गेय परंपरा से ही आज सुरक्षित हैं। भारतवर्ष में चौपाल का महत्त्व इस दृष्टि से आँका जाना चाहिए। श्रव्य शब्द किसी भाषा की शक्ति का प्रतीक होता है। मुद्रित भाषा पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं आदि में विशेषतः। आकाशवाणी तथा दूर-दर्शन में इस रूप का ही विशेष स्थान है।

भाषा के श्रव्य रूप का विशेष महत्त्व है लेकिन उसकी कुछ कमियाँ भी हैं। 'संदेश' प्राप्त करते-करते कुछ दूरी आ जाती है क्योंकि उसमें कभी अपनी ओर से जोड़ देते हैं, कभी कम कर देते हैं। कभी उस वाक्य को नया रूप देकर नया अर्थ दे देते हैं। ध्वनि (व्यंजन) से तो उनके अर्थ संभव हैं ही। कुछ दूरी तक मुद्रित भाषा में भी अर्थ को सुनिश्चित करने के लिए होता है। पर आखिर कहाँ तक मुद्रित' रूप में उस क्षमता को ला सकते हैं जो श्रव्य -मौखिक भाषा में होते है।

(क) भाषा के दो रूप कौन- से हैं? स्पष्ट कीजिए। 2

(ख) मुद्रित भाषा के लिए शिक्षित होना अनिवार्य है। क्यों? 2

(ग) मुद्रित भाषा का उपयोग कहाँ होता है? 2

(घ) भाषा के श्रव्य-रूप की किन कमियों की ओर लेखक ने ध्यान आकर्षित किया है? 2

(ङ) इस अंश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 2

उत्तर (क) भाषा के दो रूप हैं- मुद्रित एवं श्रव्य। मुद्रित अर्थात छपी हुई भाषा और श्रव्य अर्थात, वह भाषा जो बोली और सुनी जाती है। लिखित भाषा मुद्रित हो सकती है। मौखिक अभिव्यक्ति की भाषा श्रव्य भाषा है।

(ख) कहना सुनना बिना शिक्षित हुए भी संभव है लेकिन मुद्रित भाषा पढ़ने के लिए शिक्षित होना अनिवार्य है। समाज में रहते हुए, अनुकरण करते हुए वाचिक या श्रव्य भाषा तो सीखी जा सकती है लेकिन मुद्रित भाषा पढ़ने के लिए लिपि-ज्ञान आवश्यक है। इसके बिना पढ़ना-लिखना संभव नहीं।

Scanned with CamScanner

(ग) मुद्रित भाषा का उपयोग पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों, समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं में होता है। शिक्षित व्यक्ति इस भाषन में छपी सामग्री पढ़ सकता है। यह मानक भाषा होती है और शब्दों के मान्य-स्वीकार्य अर्थ सबके लिए एक जैसे होते हैं।

(घ) भाषा के श्रव्य रूप की कुछ कमियों की ओर लेखक ने संकेत किया है। श्रव्य भाषा के माध्यम से संदेश प्राप्त करते हुए थोड़ा समय गुजर जाता है। ऐसा भी होता है कि वक्ता अपनी ओर से संदेश में कुछ जोड़ दे और श्रोता के लिए अर्थ कुछ रंग बदलकर आए। श्रव्य भाषा में अभिव्यक्ति के क्रम में वक्ता की ओर से कुछ जोड़ा या कम दिया जा सकता है। यह श्रव्य भाषा की एक कमी है।

(ङ) इस गद्यांश का उपयुत शीर्षक होगा- 'भाषा'।

खण्ड- 'ख'

प्र. 3 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए:- 5

(क) निरक्षरता एक अभिशाप

(ख) दहेज प्रथा समस्या एवं समाधान

(ग) भारतः उभरती विश्व-शक्ति

उत्तर (ख) दहेज प्रथा समस्या एवं समाधान

दहेज प्रथा समाज की प्रमुख कुरीतियों में से एक है, समाज बहुत सी प्रथायें प्रचलित हैं, जैसे सतीप्रथा, पर्दाप्रथा और दहेज प्रथा आदि। आज पुरानी प्रथा नकारात्मक होती जा रही हैं। वे आधुनिक जीवन के नये मूल्यों, समस्याओं तथा आवश्यकताओं से मेल नहीं खाती। अतः वह निरर्थक हैं। ऐसी प्रथाये सामाजिक एवं नैतिक बुराइयों को जन्म देती हैं।

दहेज प्रथा पहले से प्रचलित प्रथा हैं। सर्वप्रथम स्त्रीधन के रूप में यह प्रथा चली। भविष्य की सुरक्षा के लिए कन्या के माता-पिता उसे दहेज रूपी धन देते थे। आज दहेज प्रथा शिक्षित तथाकथित सभ्य लोगों में अधिक है। धनी लोग इसके माध्यम से अपना प्रदर्शन करते हैं। गरीब तथा मध्यम वर्ग के लोग इससे परेशान हो जाते हैं। आधुनिक समाज में यह प्रथा विकट रूप धारण कर चुकी है। लड़के पक्ष के द्वारा लड़की तथा उसके माता पिता को तंग किया जाता है। यहाँ तक कि लड़की को जला देने तथा हत्या कर देने में भी नहीं शर्माते।

दहेज प्रथा के विरोध में सरकार के द्वारा कई कानून बनाये गए है। परन्तु कानून बना देने मात्र से यह प्रथा बन्द नही हो जाती। इसको समाप्त करने के लिए सामाजिक जागरूकता की आवश्यकता है। समाज के द्वारा ही इसे नकारा जा सकता है। लोगों में चरित्र का निर्माण होगा तथा सत् चरित्र का विकास होगा तभी इस प्रथा का अन्त होगा।

प्र. 4 'एशिया -पैसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फिल्म एंड मीडिया स्टडीज' नामक एक संस्था फिल्म और दूरदर्शन के लिए कार्यक्रम बनाती है और कलाकारों को प्रशिक्षण देती है। उसका कार्यालय दीवान स्टुडियो कॉम्पलेक्स, एफ-डी 16/17, फिल्म सिटी, नोएडा- 201301 उत्तर प्रदेश में है। इस संस्था में प्रवेश पाने के लिए अपनी योग्यताओं और रूचियों का विवरण देते हुए प्रबंध निदेशक को एक आवेदन -पत्र लिखिए। 5

अथवा

ऐतिहासिक महत्व के स्थलों में कर्मचारियों द्वारा बरती जा रही असावधानी पर चिंता व्यक्त करते हुए पुरातत्व विभाग के महानिदेशक, नयी दिल्ली को पत्र लिखिए। आप हैं- मंयक गौरव, बी- 42, गाँधी नगर, कॉलोनी, धनबाद।

उत्तर अथवा

Scanned with CamScanner

सेवा में-

श्रीमान् महानिदेशक

पुरातत्व विभाग,

नई दिल्ली।

महोदय,

विनम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ कि ऐतिहासिक महत्त्व के स्थानों पर कर्मचारियों द्वारा बरती जा रही असावधानियों में कई समस्याओं के उत्पन्न होने के खतरे बढ़ गये हैं।

कर्मचारियों का लापरवाही पूर्ण रवैया हमारे ऐतिहासिक महत्त्व के स्थानों की सुरक्षा पर प्रश्न चिह्न लगा देता है तथा इसका पर्यटकों पर भी अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता है।

पर्यटकों के सामान तथा उनकी भली-भाँति जाँच कर अंदर भेजने के बजाय बेरोकटोक उन्हें आने-जाने दिया जाता है। कार्यअवधि में प्रवेश द्वार पर अमूमन कर्मचारी होते ही नहीं हैं। ऐसे में इमारतों की सुरक्षा की अपेक्षा कैसे की जा सकती है?

अतएव, उपर्युक्त संदर्भ में आपसे अनुरोध है कि आप इस स्थिति पर गौर करते हुए संबंधित कर्मचारियों को सुचारू रूप से कार्य करने के निर्देश पारित करें जिससे कोई ऐसी घटना न घटे जिससे हम इन ऐतिहासिक धरोहरों की सुरक्षा कर पाने में विफल हों।

सधन्यवाद!

मयंक गौरव

बी- 42

गाँधीनगर कॉलोनी, धन्यवाद, झारखण्ड।

दिनांक - 20.08.2010

प्र. 5 नगर में बदहाल सफाई- व्यवस्था पर एक रिपोर्ट लिखिए। 5

अथवा

बाजारवाद के दौर में साहित्य विषय पर एक संपादकीय प्रस्तुत कीजिए।

अथवा

उत्तर

बाजारवादी दौर में साहित्य

आजकल यह चर्चा जोरों पर है कि बाजारवाद और उपभोक्तावाद की आँधी से जीवन के सारे क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। साहित्य की दुनिया भी इससे अछूती नहीं है। यों यह मान्यता रही है कि अच्छा साहित्य और अच्छे साहित्यकार कभी किसी प्रलोभन, दबाव अथवा किसी प्रकार के आकर्षण या पुरस्कार, विज्ञापन के मोहताज नहीं होते। आज की बदलती मान्यताओं और बदलते माहौल के कारण व्यक्तिवाद, प्रदर्शन एवं कृत्रिमता का जोर बढ़ा है और प्रकाशक भी प्रचारित नाम के पीछे ज्यादा भागते नजर आते हैं। अर्थ के प्रेरक तत्व होने से साहित्य एवं पत्र-पत्रिकाओं की ब्रिकी में विवाद, रहस्य, रोमांच, अपराध, घोटालों, रहस्योद्‌घाटनों और अश्लील सामग्री की मात्रा बढ़ गयी है। पत्र-पत्रिकाओं में साहित्य-सामग्री की मात्रा घट रही है। फैशन, ग्लैमर, सनसनी सब तरफ हावी है। साहित्य -पारखी प्रकाशक भी कम रह गये हैं। जन-जन से जुड़े लोक-साहित्य का पुट भी कमतर हुआ है जबकि सर्वमान्य बात यह रही है कि लोकसाहित्य समय के साथ नष्ट नहीं होता और सच्चा साहित्य जमीन से फूटता है। सद्‌साहित्य यदि उपभोक्तावाद, वैश्वीकरण, पश्चिम के अँधानुकरण और वाजारवाद की दौड़ में पिछड़ा तो फिर समाज, संस्कृति, विरासत एवं अपनी अस्मिता की पहचान का क्या होगा? संवेदनशील साहित्यकार और पाठक के लिए यह स्थिति चिंतनीय है। ऐसी दशा में रचनाकार को पाठक तक पहुँचना होगा और पाठक को भी बाजारवाद से हटकर

Scanned with CamScanner

लिखी जानेवाली रचनाओं की तलाश करनी होगी। लेखकों को विचार करना होगा कि वे क्या लिखें, कैसा लिखें, ताकि पाठक उनकी रचनाओं तक खिंचे चले आयें। उनके अंतर्मन के प्रश्नों, ज्वलंत मुद्दों और द्वंद्वों के उत्तर मिलें।

ऐसे समय में हमें अपने महान् साहित्यकारों का स्मरण सही राह दिखा सकता है। अभी-अभी कई साहित्यकारों की जन्मशती गुजरी है। उनलोगों ने कैसे अपने जीवन में आये झंझावतों से जूझते हुए सद्साहित्य की रचना की। इस संदर्भ में प्रसिद्ध आलोचक आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की टिप्पणी ध्यातव्य है- "राजनीतिक प्रगतिशीलता जीवन की गहराई में प्रवेश किये बिना नहीं आती" हमें आज के बाजारवादी दौर में यह बात गांठ बांध लेनी चाहिए कि पैसों से हम भौतिक समृद्धि हासिल कर सकते हैं, लेकिन मानसिक समृद्धि और स्वास्थ्य के लिए हम साहित्य का अध्ययन अवश्य करें।

प्र. 6 निम्नलिखित विषय में से किसी एक पर फीचर लिखिए। 5

परीक्षा की तैयारी कैसे करें?

अथवा

ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव

उत्तर

अथवा

ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव

सावधान पड़ोस में पड़ चुकी है दहशत की दस्तक'

अगली सदी की शुरूआत में ग्लोबल वार्मिंग कारण भारत के तटीय इलाके का जलस्तर 40 सेंटीमीटर तक बढ़ेगा। पाँच करोड़ लोग विस्थापित होंगे। मैदानी इलाकों में तबाही का मंजर होगा। तापमान बढ़ने के कारण शीतऋतु की अवधि घटेगी। पानी की कमी होगी। जानवर भूखे मरेंगे। 2030 में फिर गंगा का पठार पूरी तरह बंजर हो जायेगा। गेहूँ की उपज होगी ही नहीं। महामारी बढ़ेगी। निवास को लेकर सामाजिक तनाव बढ़ेगा। खाद्यान्न के लिए आपसी द्वेष हिंसा का रूप ले लेगा' भारत के संबंध में ये भविष्यवाणियाँ विशेषज्ञों ने की है। यानि 2030- 2100 ईस्वी में देश इसी तरह की समस्याओं से जूझ रहा होगा। इस विनाशकारी बदलाव की आहट सुनाई पड़ने लगी है। यह दस्तक दूरदराज नहीं बल्कि पड़ोसी राज्य ओड़िसा में सुनाई पड़ रही है। इस ताबाही का असर झारखंड, बंगाल जैसे राज्यों पर सबसे ज्यादा पडेगा।

ओड़िसा के तटीय जिला केन्द्रपाड़ा में समुद्री तल का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। पिछले चार माह में जिले का सतभावा गाँव समुद्री पानी से पूरी तरह घिर चुका है। जनवरी 2008 से अब तक लगभग सौ परिवार घरविहीन हो चुके हैं। अब यहाँ आठ परिवार बचे हैं, जो नये अशियानों की तलाश में हैं। इसी जिले के कान्हपुर गाँव के 93 परिवार गाँव छोड़ चुके हैं। दस साल पहले तक जिला का जो प्राचीन व प्रसिद्ध मंदिर समुद्री तट से लगभग दो किलोमीटर दूर था, अब उसमें समुद्र की लहरें प्रवेश करती हैं। इन दोनों गावों के लोग बगल के ओकिल पाड़ा गाँव की ओर रूख कर रहे हैं, जहाँ पलायन के कारण सामाजिक विद्वेष व तनाव की स्थिति पैदा हो रही है। स्थानीय लोगों के अनुसार पिछले साल लगभग 30 फीट पानी चढ़ा है। कृषि की जमीन समुद्री जल के हवाले तो माल-मवेशी भगवान भरोसे छोड़कर लोग किसी तरह रहने की जगह तलाश कर रहे हैं।

दोनों गाँवों की रपट इंफोचेंज इंडिया के फेलो रिचर्ड महापात्र ने ओड़िशा जाकर वहाँ ग्लोवल वार्मिंग के प्रभाव का गहराई से अध्ययन कर दी है। ये दो गाँव उदाहरण भर हैं। ओड़िशा के अन्य इलाकों में भी इसी तरह की स्थितियाँ हैं। सतभावा और कान्हपुर गाँव में पड़ी दस्तक से ओड़िशा के तमाम तटवर्ती इलाके भविष्य के प्रति खौफ में हैं।

Scanned with CamScanner

ओड़िशा में विनाश का सबसे अधिक प्रभाव पड़ोसी राज्यों पर पड़ेगा। ग्रीन पीस इंडिया रिपोर्ट में कहा जा चुका है कि महाराष्ट्र के बाद सबसे ज्यादा तबाही बंगाल को उठानी होंगी। जहाँ तटीय इलाके से लगभग एक करोड़ लोग मैदानी इलाके में विस्थापित होने के लिए विवश होंगे। इसी रिपोर्ट में यह भी है कि ओड़िसा से लगभग 40 लाख पड़ोसी मैदानी क्षेत्र में पलायन रहेंगे। 22वीं सदी के आंरभ में दक्षिण बिहार और झारखंड में कम से कम 10 लाख नये लोग आशियाने की तलाश में आयेंगे।

खण्ड- 'ग'

प्र. 7 निम्नलिखित में से दो काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:-

2+2+2+2=8

कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने।
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
बिना मुरझायें महकने के माने
फूल क्या जाने ?

(क) उपर्युक्त पंक्तियाँ किस पाठ की हैं?

(ख) इसमें कवि के द्वारा, किस ओर संकेत किया गया है?

(ग) उपर्युक्त पंक्तियों की भाषा क्या है ?

(घ) फूल और कविता में क्या अन्तर है?

उत्तर (क) उपर्युक्त काव्यांश कुंवर नारायण द्वारा रचित 'कविता के बहाने' पाठ की हैं।

(ख) इसमें कवि के द्वारा कविता के दीर्घजीवी होने की ओर संकेत किया गया है।

(ग) उपर्युक्त काव्यांश की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है।

(घ) फूल कुछ समय के लिए खिलकर तथा सुगंध फैलाकर बिखर जाता है तथा वह मुरझाकर समाप्त हो जाता है परन्तु कवि बिना मुरझाए सदा जीवित रहता है।

अथवा

नीले जल में या किसी की
गैर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।

(क) यह काव्यांश किस रचना की हैं ?

(ख) इसके कवि कौन हैं ?

(ग) कवि ने इसमें किसका चित्रण किया है?

(घ) उषा (प्रातः) की निर्मलता की तुलना किससे की गई है?

उत्तर (क) यह काव्यांश 'उषा' कविता का है।

(ख) इस काव्यांश के कवि शमशेर बहादुर सिंह हैं।

(ग) कवि ने इसमें प्रातः काल में सूर्योदय होने पर प्रकृति के आकर्षण टूटने का वर्णन किया है।

(घ) उषा की निर्मलता की तुलना नीले जल में गोरे देह की चमक के साथ की है।

Scanned with CamScanner

प्र. 8 निम्नलिखित में से किन्हीं दो काव्यांशों का सौंदर्य बोध स्पष्ट कीजिए- **3+3=6**

(क) नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।

(ख) जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिवर कर हीना।।
अस मम जीवन बंधु बिनतो ही जो जड़दैव जिआवै मोही।

(ग) रक्षा-बंधन की सुबह रस की पुतली
छायी है घटा गगन की हल्की-हल्की
बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे
भाई के हैं बाँधती चमकती राखी

उत्तर (क) कवि शमशेर बहादुर सिंह ने इन पंक्तियों में प्राकृतिक वैभव का वर्णन करते हुए कहा है कि नीले आसमान में सूर्य किसी गोरी की तरह झिलमिलाता है। उदाहरण अंलकार है। दृश्यात्मक बिंब के साथ यह काव्यांश मुक्त छंद में रचित है। खड़ी बोली साहित्यिक भाषा होने के बावजूद प्रवाह है। मिश्रित शब्दावली इसके प्रभाव में वृद्धि करती है।

(ख) श्रीराम चन्द्र जी अपने भाई लक्ष्मण को मेघनाद के वाण से मूर्च्छित होने पर व्याकुल हो उठे तथा साधारण मनुष्य जेसे करूण विलाप करने लगे। उनका कहना था कि संसार में सभी कुछ पुन: मिल सकता है परन्तु सहोदर भाई नहीं मिल सकता। लक्ष्मण इसी कारण मूर्च्छित लक्ष्मण के समक्ष बार-बार विलाप कर उन्हें जगने के लिए बार-बार आग्रह करते हैं। इसमें राम का लक्ष्मण के प्रति प्रेम प्रकट हुआ है। इसमें सरल अवधी भाषा का प्रयोग है तथा तत्सम शब्द की प्रधानता भी है।

प्र. 9 अधोलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए:- 2+2=4

(क) कवि सुख-दुख दोनों स्थितियों में कैसे रहता है? 'आत्मपरिचय' कविता के आधार पर उत्तर लिखिए।

(ख) कवि चाँद की तरह आत्मा पर झुका चेहरा भूलकर अंधकार अमावस्या में क्यों नहाना चाहता है? 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता के आधार पर बताइए।

(ग) कील की तरह ठोंकने पर क्या हुआ? 'बात सीधी थी पर' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर (क) कवि दुख में न अधिक दुखी होता है और न सुख में अधिक सुखी होता है। वह दोनों ही स्थितियों में सामंजस्य बनाए रखना चाहता है। कवि दोनों दशाओं को एक समान मानते हुए इसे मानव जीवन का हिस्सा मानता है।

(ख) कवि ने भाषा की सुदंरता के चक्कर में अपनी बात कहनी चाही पर वह सफल नहीं हो सका और अंत में उसने जबरदस्ती शब्दों का प्रयोग किया। इससे बाहरी तौर पर कविता ठीक दिखाई दे रही थी, परंतु उसमें न भाव थे और न ताकत ही थी।

प्र. 10 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 2+2+2+2=8

शिरीष के वृक्ष बड़े और छायादार होते हैं। पुराने भारत का रईस जिन मंगलजनक वृक्षों को अपनी वृक्ष-वाटिका की चहारदीवारी के पास लगाया करता था, उनमें एक शिरीष भी है। अशोक, अरिष्ट, पुन्नाग और शिरीष के छायादार और घनमसृण हरीतिमा से परिवेष्टित वृक्ष-वाटिका जरूर बड़ी मनोहर दिखती होगी। वात्स्यायन ने 'कामसूत्र' में बताया है कि वाटिका के सघन छायादार वृक्षों की छाया में ही झूला(प्रेंखा दोला) लगाया जाना चाहिए। यद्यपि पुराने कवि बकुल के पेड़ में ऐसी दोलाओं को लगा देखना चाहते थे, पर शिरीष भी

Scanned with CamScanner

क्या बुरा है! डाल इसकी अपेक्षाकृत कमजोर जरूर होती है, पर उसमें झूलनेवालियों का वजन भी तो बहुत ज्यादा नहीं होता। कवियों की यही तो बुरी आदत है कि वजन का एकदम ख्याल नहीं करते।

(क) शिरीष के वृक्ष का क्या महत्व है?

(ख) शिरीष ने कामसूत्र में क्या बताया है?

(ख) शिरीष में क्या कमी है?

(घ) कवियों की किस बुरी आदत का लेखक वर्णन करता है?

अथवा

चैप्लिन ने न सिर्फ फिल्म कला को लोकतांत्रिक बनाया बल्कि दर्शकों के वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था को तोड़ा। यह अकारण नहीं है कि जो भी अन्य संस्थाओं के अलावा चैप्लिन की फिल्मों पर हमला करता है। चैप्लिन भीड़ का वह बच्चा है जो इशारे से बतला देता है कि राजा भी उतना नंगा है जितना मैं हूँ और भीड़ हँस देती है। कोई भी शासक या तंत्र जनता का अपने ऊपर हँसना पसंद नहीं करता। एक परित्यक्ता, दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री का बेटा होना, बाद में भयावह गरीबी और माँ के पागलपन से संघर्ष करना, साम्राज्य, औद्योगिक क्रांति, पूँजीवाद तथा सांमतवादी से मगरूर एक समाज द्वारा दुहराया जाना -इन सबसे चैप्लिन को वे जीवन-मूल्य मिले जो करोड़पति हो जाने के बावजूद अंत तक उनमें रहे।

(क) चैप्लिन ने क्या क्रांतिकारी काम किए?

(ख) चैप्लिन इशारे से क्या बता देता था?

(ग) चैप्लिन की फिल्मों पर कौन हमला करते हैं?

(घ) चैप्लिन को जीवन-मूल्य कहाँ से मिले जो अंत तक उसके जीवन में रहे?

उत्तर

अथवा

(क) चैप्लिन ने क्रांतिकारी काम यह किया कि उसने न सिर्फ फिल्म कला को लोकतांत्रिक बनाया बल्कि दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था को तोड़ा।

(ख) चैप्लिन के बारे में लेखक कहता है कि चैप्लिन भीड़ का वह बच्चा है जो इशारे से बतला देता है कि राजा भी उतना ही नंगा है जितना मैं हूँ और भीड़ हँस देती है।

(ग) जो भी व्यक्ति, समूह या तंत्र गैर बराबरी नहीं मिटाना चाहता वह अन्य संस्थाओं के अलावा चैप्लिन की फिल्मों पर भी हमला करते हैं, क्योंकि कोई भी शासक तंत्र जनता का अपने ऊपर हँसना पसंद नहीं करता।

(घ) एक परित्यकता, दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री का बेटा होना, बाद में भयावह गरीबी और माँ के पागलपन से संघर्ष करना, साम्राज्य, औद्योगिक क्रांति, पूँजीवाद तथा सामंतशाही से मगरूर एक समाज द्वारा दुरदुराया जाना- इन सबसे चैप्लिन को वे जीवन-मूल्य मिले जो करोड़पति हो जीने के बावजूद अंत तक उसके जीवन में रहें।

प्र. 11 निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए:- 3+3+3+3=12

(क) भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। लेखिका ने ऐसा क्यों कहा?

(ख) बाजार के जादू के चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है?

(ग) सफिया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से क्यों मना कर दिया?

(घ) द्विवेदी जी ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संयासी) की तरह क्यों माना है?

(ङ) आंबेडकर जी के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है?

Scanned with CamScanner

उत्तर (क) लेखिका महादेवी वर्मा बताती हैं कि जब भक्तिन उसके घर पर काम करने आई तो वह बहुत भोली व सीधी लगती थी। जैसे-जैसे उसका संपर्क बढ़ता गया, वैसे-वैसे उसकी कमियों के बारे में पता चलता गया। लेखिका को उसकी बुराइयों का पता चलने लगा। वह चोरी भी करती थी। इस वजह से लेखिका ने कहा कि भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं है।

(ग) सफिया का बड़ा भाई पुलिस का एक बड़ा अधिकारी था। वह भली भांति जानता था कि पाकिस्तान का लाहौरी नमक भारत ले जाना गैर कानूनी और नामुमकिन कार्य है। इसी कारण बहन सफिया को नमक ले जाने से मना कर दिया क्योंकि कस्टम अधिकारी की जाँच में वह पकड़ी जा सकती थी तथा पुलिस अधिकारी की बदनामी हो सकती थी।

(ङ) लेखक डा० भीमराव अंबेडकर ने 'दासता' के संदर्भ में बताया है कि दासता केवल कानूनी पराधीनता ही नहीं है। डॉ० अंबेडकर की दृष्टि में वस्तुतः दासता वह है जिसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार तथा कर्त्तव्यों का पालन करने को मजबूर होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जाती है। इस दासता को बनाये रखने में जाति-प्रथा की भूमिका अहम रही है।

प्र. 12 निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:- 3+3+3=9

(क) यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती हैं लेकिन यशोधर बाबू क्यों असफल रहते है?

(ख) आनंदा का पिता कोल्हू जल्दी क्यों चलवाता था?

(ग) मोहनजोदड़ो की जल निकासी व्यवस्था पर अपने विचार दीजिए।

(घ) 19 मार्च, 1943 को ऐन की खुशियाँ निराशा में क्यों बदल गई?

उत्तर (क) यशोधर बाबू की पत्नी समय के अनुसार चलना जानती हैं, उनके अनुसार बच्चों के अनुसार चलने में ही उनकी सहानुभति प्राप्त की जा सकती है; परन्तु यशोधर बाबू समय के अनुसार अपने को ढालने मे असफल होते हैं। वे कोई भी निर्णय नहीं लेना जानते। उनके मन में प्राचीन मूल्यों और परंपराओं के बीच द्वन्द्व है। परम्परावादी होने के कारण वे परिवारके आधुनिक सदस्यों से तालमेल नहीं कर पाते।

(ख) आंनदा (लेखक) का पिता जल्दी कोल्हू चलवा देता था। उसक मानना था कि कोल्हू जल्दी चलवाने से ईख की अच्छी कीमत मिलने की संभावना ज्यादा हो जाएगी। उनके कोल्हू से निकलनेवाला गुड़ बहुत अच्छी गुणवत्ता का नहीं होता था, परंतु उस समय पर कोई भी कोल्हू नहीं चलाता था। इसलिए उनके गुड़ की माँग ठीक रहती थी और वे अपनी ईख की अच्छी कीमत वसूल कर लेते थे।

(ङ) ऐन और उसका परिवार अज्ञातवास में था। वे बंद माहौल में रहना सीख गए थे। 19 मार्च, 1943 को केंद्रीय मंत्री ने घोषणा की कि तुर्की जल्दी ही तटस्थता छोड़ देगा यह समाचार सुनकर उनकी खुशियाँ समाप्त हो गई। इसका कारण यह था कि तुर्की इंग्लैंड के पक्ष में होने जा रहा था। इससे युद्ध खत्म होने के आसार नहीं था। इसी वजह से उनकी खुशियाँ निराशा में बदल गई।

प्र. 13 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए:- 3+3=6

(क) श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की विशेषताओं का वर्णन करें जिसके कारण लेखक के मन में कविताओं के प्रति रूचि जगी?

(ख) खुदाई में मिले महाकुंड के बारे में 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर लिखिए।

(ग) डच मंत्री की किस घोषणा से ऐन रोमांचित हो उठी?

Scanned with CamScanner

उत्तर (क) श्री सौंदलगेकर मराठी भाषा के कवि तथा अध्यापक थे। वे अपने अध्यापन के क्रम में कविता में रम जाते थे। वे कविता का सस्वर पाठ आकर्षक ढंग से करते थे। उनकी कविता पाठ संगीत मय थी। वे अभिनयात्मक शैली में कविता पढ़ाते थे तथा स्वरचित कविता का पाठ भी करते थे। सौंदलगेकर की कविता पाठ की शैली से प्रभावित होकर लेखक को कविताओं के प्रति रूचि उत्पन्न हुई।

(ख) लेखक ने मोहनजोदड़ो की यात्रा के पश्चात जो विवरण दिया है उसके मुताबिक उसने वहाँ एक महाकुंड देखा जो स्तूप के टीले के पास था। इसके दायीं ओर एक लंबी गली है। इस महाकुंड की गली का नाम देव मार्ग रखा गया है। लेखक के अनुसार यह संयोग भी हो सकता है कि कुंड का दैवीय नाम रखा जाय। महाकुंड के बारे में भी यह भी माना जाता है कि सिंधु घाटी के लोग इसी कुंड मे सामूहिक स्नान भी किया करते थे।

प्र. 14 "काश, कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफसोस, ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला.....। क्या आपको लगता है कि ऐन के इस कथन में उसके डायरी लेखन का कारण छिपा हुए है? 5

अथवा

स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास 'जूझ' के लेखक के मन में कैसे उत्पन्न हुआ?

उत्तर ऐन फ्रैंक ने अपने समकालीन सत्य को शब्दबद्ध किया है। इतना कुछ उसके चारों ओर घटित हो रहा था कि चुप रहना मुश्किल था। इसके बावजूद कहना संभव नहीं था। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी में नाजियों द्वारा यहूदियों पर होनेवाले अत्याचार ऐन फ्रैंक की पीड़ा बढ़ा रहे थे। ऐसे में छिपकर रहना मजबूरी थी। बेबस जिंदगी व्यतीत करती ऐन फ्रैंक खुलकर जीने को आतुर थी। बैचेन थी। प्रकृति के प्रति उसमें अदम्य आकर्षण था। युद्ध, विनाश और संहार के इस माहौल में प्रकृति के प्रति यह आकर्षण प्रतिकूल परिस्थितियों में मनुष्य की जिजीविषा का रेखांकन है।

जीवन से भरपूर लेखिका ऐसे में कहना चाहती थी बहुत कुछ। मगर किससे? उसकी समझ में नहीं आता था। पीटर अपनी सारी बांते उसें नही बताता था। वह मुन्ना था। ऐन फ्रेंक ने अपने अनुभवों और इच्छाओं का शब्दबद्ध करना शुरू किया। यह डायरी लेखन की शुरूआत थी। त्रासद समय मान की सहज इच्छाओं की अभिव्यक्ति द्वारा डायरी में होने लगी।

एक और कारण भी बन गया जरा बाद में, डायरी लेखन का। कैबिनेट मंत्री मिस्टर वोल्के स्टीन ने लंदन से डच प्रसारण में कहा कि युद्ध के बाद युद्ध का वर्णन करने वाली डायरियाँ और पत्रों का संग्रह किया जाएगा। ऐन फ्रैंक के मन में अपनी प्रसिद्धि का ख्याल आया। लोगों को जब उनकी जीवन-स्थितियों का पता चलेगा, तो वे क्या सोचेंगे? ऐसे कई कारण थे कि ऐन फ्रैंक ने डायरी लेखन शुरू किया। 'काश कोई होता.....' कहनेवाली ने 'किट्टी' से अपनी डायरी के बहाने बातें करना शुरू कर दिया।

Scanned with CamScanner